Dazzling VIGYAN SAMITI

Dr.Prachi A. Bhatnagar
Lecturer,
Food Craft Institute, Udaipur

Vigyan Samiti, Udaipur is an organization not merely a group of people pondering on issues around themselves, but a foundation of the learned and experienced individuals who know very well how to put their skills and knowledge into action that would truly bring a change.

I consider myself extremely fortunate to be perchance the youngest member of VIGYAN SAMITI, Udaipur and rejoicing with the organization this period of time in its history when it celebrates 55 years of its existence.

Vigyan Samiti, Udaipur carries a very rich tradition of many great achievements and I salute to the wisdom of its initiators having the vision to establish this organisation for the cause of societal development and for the working committee and members for their commitment. All praises and gratitude to Shri K. L. Kothari, (“Kundan Uncle” as addressed by me since childhood) for structuring this assortment of intellectuals who work hand in hand using new technologies and new approaches for changing the life of the needy.Today, when a reasonable number of people in our societies face challenges and problems pertaining to their living and livelihood, Vigyan Samiti, Udaipur has performed and is recognized for its renewed strength to play a part as a boon to those in need.

The event of Golden Jubilee seems dazzling with diamonds as I profoundly wish the ever smiling, spirited, flamboyant and gifted personality Shri K.L. Kothari on this auspicious day.

The years to come, the profound members and affiliates are to add many more pages of achievements to the tome, i.e.Vigyan Samiti, Udaipur.

Our best wishes to Shri Kundan Uncle - !! HAPPY BIRTHDAY !! ....

A creator of Scientific temper

- Dr Lalit Kumar Kothari
MD, FAMS
Jaipur

What a pleasure to felicitate Dr. KL Kothari on the happy occasion of this 81st birthday. Eighty years of joy and sunshine, purposeful attainments and the warm companionship of friends and colleagues. I begin to wonder for how long I have myself known Dr Kothari. The mist of time clouds the memory as one goes farther and farther into the past. But I think it must have been almost fifty years ago when he asked me to write something for Lok-Vigyan Patrika he had started. Writing about modern science for the common man, and that too in Hindi ! What a joke, I thought at that time. But Dr. Kothari's determination, progressive outlook and persistent hard work kept Lok-Vigyan alive till it blossomed out into the Vigyan Samiti of today. I am glad I also started writing occasionally in Hindi on medical subjects as a result of all this.

To me it appears that Dr Kothari's main effort through all these years has been to create a"Scientific Temper" amongst our people, particularly our youth and womenfolk. A very difficult task indeed. And one that is unfortunately losing momentum in recent years. Soon after we gained independence, Pandit Nehru's had said, "Science alone can solve the problems of hunger and poverty, of insanitation and illiteracy, of superstition and deadening customs in a rich country inhabited by starving people."

It seems the human body is designed to work for 100 years, unless spoilt by misuse. Our ancient sages also thought similarly. So let us forget the years that have gone by, and dream about the joyful years still to come. May the good work of the Vigyan Samiti continue to advance under the dynamic leadership of Doctor sahib, and May God bless us all.

जनमानस में वैज्ञानिक सोच के विस्तारक डॉ. कोठारी

एन.एस. खमेसरा
सेवानिवृत्त अतिरिक्त निदेशक (भूविज्ञान)
खान एवं भूविज्ञान विभाग
राजस्थान सरकार, उदयपुर

उन क्षणों में जब एकतंत्र की बेड़ियों से मुक्त भारत अपनी नई उड़ान के पंख फैलाने का प्रयास कर रहा था, तब ऐसे कम ही लोग थे जो तर्क व न्यायोचित चिन्तन के आधार पर समाज की सोच बदलने की योजना बना रहे थे, उन दिनों जब मेवाड़ी, बंधनकारी परम्पराओं से राहत पाने हेतु छटपटा रहे थे, उस समय डॉ. के.एल. कोठारी जैसे दूरदर्शी, चिंतक, विचारक का मन भावी पीढ़ी के भविष्य को सुधारने का स्वप्न देख रहा था । अपने वैज्ञानिक अन्तर्मन की तरंगों को दिशा देने हेतु ऐसी संस्था को जन्म दे रहे थे जो आगे जाकर आम आदमी की सोच को दिशा दे सके। उसी वैज्ञानिक सोच का परिणाम है विज्ञान समिति का गठन, जो वर्ष 1959 से अपना जीवन प्रारम्भ कर आज तक विज्ञान के विभिन्न विषयों से संबंधित जानकारियों को जनमानस में उतारने का प्रयास कर रहा है। विज्ञान व प्रौद्योगिकी, आध्यात्मिक, चिकित्सा, कृषि आदि विषयों में एकात्मकता की खोज में संलग्न इस संस्था के संस्थापक डॉ. कोठारी स्वयं एक संस्था बन गए हैं।

तर्क एवं प्रमाण सम्मत वैचारिक प्रवाह को गति देने वाली इस संस्था के सर्जक डॉ. कोठारी के जीवन के आठ दशक पूर्ण करने के शुभ अवसर पर उनके प्रयत्नों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं। महिला सशक्तीकरण, चिकित्सा, कृषि, विज्ञान, आध्यात्मिक आदि क्षेत्रों में किए गए डॉ. कोठारी के प्रयासों को स्मरण कर मैं स्वयं विस्मित हूं। यही ऊर्जा, विश्वास एवं कार्यकुशलता हमारा पाथेय बनी रहे। इस निमित्त मैं हमारे आदर्श पुरुष डॉ. के.एल. कोठारी के सुदीर्घ एवं स्वस्थ जीवन की कामना करते हुए परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि इन्हें सर्वतोभावेन इतना सक्षम बनाये रखें कि जनसेवा में लम्बे समय तक हमारा मार्गदर्शन करते रहें।

डॉ. कोठारी सा. 80 वर्ष पूरे कर चुके हैं लेकिन अभी मुस्कान, चाल–ढ़ाल, स्फूर्ति को देख कर कोई नहीं कह सकता है कि डॉ. कोठारी वयोवृद्ध की श्रेणी में आ गए हैं। बुढ़ापा एक मानसिक स्थिति है। कोठारी सा. को अभी जीना है जीवंतता के साथ । इनकी जीवन शैली बहुत सरल व सादगीपूर्ण है। सबसे बड़ा गुण है कि ये हर उम्र के लोगों के साथ तत्परता से घुलमिल जाते हैं व पूर्ण सहयोग करते हैं।

अभी कुछ वर्षों से वैज्ञानिक डॉ. कोठारी सा. काव्यधारा के रूप में भी बहने लगे हैं जिससे श्रोतागण मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। आपने अपने नाम के अनुरूप समाज में 'कुन्दन' सी आभा बिखरने का

श्रम किया है। इस निमित्त समाज आपका आभार प्रकट करता है। आपकी आत्मीयता, अपनापन, उदारता, समर्पण एवं सोच हमेशा समाज के लिए प्रेरणास्पद है।

महावीर इंटरनेशनल के अध्यक्षीय काल में डॉ. कोठारी ने रोगियों को राहत पहुंचाने की दृष्टि से 'रक्तदान–जीवनदान' की शुरूआत कर सेवा का नया आयाम जोड़ा, जिसके फलस्वरूप पिछले 10 वर्षों में करीब 8000 रोगी लाभान्वित हुए। डॉ. कोठारी को साधुवाद।

ऐसे हंसमुख, प्रतिभाशाली, कर्मठ, सरल व्यक्तित्व के धनी को मेरी बधाई एवं मंगलकामनाएं।...

ग्रामीण विकास के मसीहा

कन्हैयालाल नागदा

ग्राम घणोली

हमारे गांव घणोली में डॉ. के.एल. कोठारी सा. ने निम्न कार्यों की जानकारी हमें दी :–

1. हमारे गांव में महिला समूह बनाकर स्वयं सहायता समूह बनवाये एवं वीसी चालू करवाई।
2. पशुओं की किस प्रकार से देख–रेख की जाए उस विषय में हमें पूरी जानकारी दी।
3. खाद के बारे में जानकारी दी एवं वर्मी कम्पोस्ट खाद बनाने का तरीका बताया।
4. हमारे गांव में पानी में फ्लोराइड होने से हेंड पम्प पर फ्लोराइड मशीन लगवाई।
5. पौधारोपण के लिए तरीका बताया एवं पौधे दिलवाए।
6. घरेलु उद्योग के लिए मिर्ची पिसने की मशीन दिलवाई।
7. पत्तल–दोनों के लिए मशीन दिलवाई।
8. अनाज की सफाई के लिए मशीन दिलवाई।
9. बच्चों के लिए कम्प्यूटर सीखने के लिए हर सुविधा दिलवाई।
10. डॉक्टरों से स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी दिलवाई।

इसलिए हम ग्रामवासी विज्ञान समिति के बहुत आभारी हैं।...

संगठन–कौशल के सूत्रधार

जगत पोखरना
पूर्व महाप्रबंधक,
हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड

आदरणीय श्रीमान् कोठारी सा. से मेरा परिचय 2002 में मेरे रिटायरमेंट के बाद उदयपुर आने पर हुआ। महावीर इंटरनेशनल एवं विज्ञान समिति द्वारा एक संयुक्त सेवा कार्यक्रम ग्राम घणोली में सम्पन्न हुआ जिसमें पौधारोपण, रक्तदान, नशामुक्ति आदि सेवा कार्य सफलतापूर्वक पूरे किए गए। विज्ञान समिति के दर्शन प्रकोष्ठ से मैं बहुत जल्दी जुड़ गया क्योंकि ये मेरी रुचि का विषय था। सन् 2009 में मैं विज्ञान समिति का आजीवन सदस्य बना।

आदरणीय कोठारी साहब बहुत सरल एवं व्यवहार कुशल व्यक्तित्व के धनी हैं। उन्हें मैंने कभी भी गुस्सा तो छोड़ो, कभी ऊंचे स्वर में बोलते नहीं सुना। व्यक्तित्व की इन्हीं विशेषताओं के कारण विभिन्न क्षेत्रों से सेवानिवृत हुए प्रबुद्धजन, वैज्ञानिक, इंजीनियर, डॉक्टर, प्रबंधक, प्रशासक, उद्योगपति, एडवोकेट, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट, समाजसेवी आदि इस संस्था से जुड़े एवं जुड़ते ही चले गए। ऐसे विभिन्न क्षेत्रों के प्रबुद्धजनों को एक संगठन में लाना, बहुत ही मुश्किल कार्य है जिसे कोठारी सा. ही कर सकते हैं।

वर्तमान में समाज सेवा के विभिन्न कार्यों के लिए 15 प्रकोष्ठ क्रियाशील हैं जिनमें से 7 महिलाओं से संबंधित हैं। महिला सशक्तीकरण का इससे अच्छा उदाहरण क्या हो सकता है। उनकी 50 प्रतिशत भागीदारी है। हर वर्ष नए 2 आयाम जुड़ते ही जा रहे हैं। एक छोटे कॉन्फ्रेन्स हॉल से प्रारम्भ कर आज समिति के पास एक बड़ा हॉल एवं दो छोटे कॉन्फ्रेन्स हॉल है। सबसे बड़ी बात यह है कि सभी हॉल का उदयपुर निवासियों के लिए विभिन्न कार्यों में सदुपयोग हो रहा है।

कोठारी सा. की फिल्मी संगीत गाने व सुनने में अत्यधिक रुचि है और ये हमारी साझी रुचि है। वर्तमान में वे किसी भी विषय पर अच्छी कविताएं लिख रहे हैं व सुना रहे हैं जो आपकी एक विशेष प्रतिभा का परिचय देता है। मैं आदरणीय कोठारी सा. के सस्वस्थ शतायु होने की कामना करता हूं। आप इसी तरह समाज की सेवा में संलग्न रहें। ...

प्रगतिशील विचारों का प्रकाश स्तंभ

श्रीमती पुष्पा कोठारी

महान् व्यक्ति के बारे में कन्फ्यूशियस ने कछ बिन्दु प्रस्तुत करते हुए कहा–''जो सदाचारी हो, जिनका व्यवहार मधुर हो, ज्ञान सम्पन्न हो, विवेक सम्पन्न हो, नैतिक निष्ठ हो और आदर्श के प्रति समर्पित हो'' – काका साहब इन्हीं बिन्दुओं के आस–पास रहे हैं।

आपकी गुरुत्त्व, गरिमा, गौरव, गम्भीरता की गठरी कभी खाली नहीं हुई। जीवन में कई लहरें उठीं परन्तु आपके समन्दरी शख्सियत से स्पर्श पाकर कुन्दन बन गई। आपके व्यक्तित्व में एक वटवृक्ष का एहसास होता है। जिसकी छांव में सभी संरक्षण पाते हैं।

आपने स्वयं तो विज्ञान समिति के संस्थापक,संरक्षक व अध्यक्ष बनकर अनेक महत्वपूर्ण कार्यों का सम्पादन किया है। अपितु ऐसे अनेक व्यक्तियों, महिलाओं तथा हमउम्र साथियों को भी ऐसी ही अनेक गतिविधियों से जोड़ा है और वे भी आज समाज की बहुत बड़ी धरोहर बन गए हैं। यह आपके जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि रही है।

निराशा आपके जीवन से सदैव दूर रही है। यही कारण है कि जिस काम को आपने हाथ में लिया है उसको पूर्णता प्रदान की है। आप में सस्ती लोकप्रियता, प्रसिद्धि पाने की और श्रेय लूटने की भावना बिल्कुल नहीं है। आप हर कार्य में सफलता का श्रेय अपने साथियों को देकर प्रसन्न होते हैं।

महिलाएं चाहे परिवार की हो या स्वयं सहायता समूह की, उनके व्यक्तित्व का विकास हो तथा उन्हें प्रगति के हर अवसर उपलब्ध हों। स्वयं सहायता समूह की महिलाएं तथा जरूरतमंद महिलाएं स्वयं अर्थोपार्जन कर अपने आपको सशक्त बनाएं तथा आगे कदम बढ़ाएं–यह आपका लक्ष्य रहा है।

शिक्षा के लिए सबको प्रोत्साहित करना तथा इस क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने पर उनका उत्साहवर्धन करना एवं गांव का कोई भी बालक या बालिका अर्थाभाव के कारण शिक्षा से वंचित न रहे, सदैव ही आपके हृदय में इस प्रकार की उच्च भावना रही है। महिलाएं एक दूसरे की प्रतिभा से कुछ सीख सकें या सिखा सकें, उनके व्यक्तित्व का विकास हो आपकी इसी सोच ने सन् 2009 में विज्ञान समिति में नवाचार महिला प्रकोष्ठ को जन्म दिया जिसकी मीटिंग हर महीने की 10 तारीख को होती है तथा बुजुर्ग महिलाएं भी आपस में मिले–जुले तथा अपने अवकाश के समय को पूर्ण खुशी

व आत्मविश्वास के साथ व्यतीत कर सकें। इसी भावना को लेकर सन् 2010 में विज्ञान समिति में वरिष्ठ महिला प्रकोष्ठ की स्थापना हुई जिसकी मीटिंग हर महीने की 20 तारीख को होती है।

गांव की महिलाओं को भी हर क्षेत्र में किस प्रकार आगे बढ़ाया जा सके, यही चिंतन सन् 2012 में महिला चेतना शिविर के गठन का आधार बना जिसकी हर महीने की 30 तारीख को मीटिंग आयोजित की जाती है। ये सभी प्रकोष्ठ सफलतापूर्वक चल रहे हैं। इसके अलावा अपनी जन्मभूमि केलवा के लोगों से जुड़े रहना तथा गांव के विकास के बारे में भी आप सदैव चिंतनशील रहते हैं। एक ऐसे इन्सान को मेरा शत शत नमन जिन्होंने अपने जीवन को समाज के लिए समर्पित किया है।

काका साहब रूढ़िवादिता से कोसों दूर एक प्रगतिशील सोच के धनी है। सदैव ही सम्पूर्ण परिवार के विकास के बारे में भी अपनी उदार सोच रखते हैं। घर में कभी कोई बीमार हो जाए तो उसके मेडिकल उपचार की जिम्मेदारी स्वयं रखते हैं।

आपका अपने माता पिता के प्रति जो सम्मान व सेवाभाव था उसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता । एक बार धाईसा (आपकी मातुश्री) कुछ समय के लिए हमारे यहां पधारे, तब एक भी दिन ऐसा नहीं होता था, जब आप उनसे मिलने नहीं पधारते तथा उनके स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता नहीं रखते। प्रोफेसर काका साहब रोज प्रातः उनके कपड़े बदलवाकर उनके बिस्तर का चद्दर बदलकर उस पर गुलाब जल छिड़क कर फिर ऑफिस पधारते थे और धाईसा. को अकेलापन महसूस न हो इसके लिए एक नियम बना दिया गया था कि ड्राईंग रूम हमेशा बंद रहेगा, घर में जो भी आएगा वह धाईसा के पास ही बैठेगा। तिरानवें वर्ष की अवस्था में जब धाईसा का देहावसान हुआ तब भी आपको इतना आघात पहुँचा कि डॉक्टर्स को काका साहब को नींद की गोली देनी पड़ी।

यह सेवाभावना हम सबके लिए अनुकरणीय है। जिसकी चर्चा करने मात्र से गौरव की अनुभूति होती है तथा मन में एक आह्लाद का स्पन्दन होता है। इतना ही नहीं, शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् जब आपकी उदयपरु में अल्प वैतनिक नौकरी लगी, आप अपनी बहिन सन्तोष जी तथा अपने भतीजे यशवन्त जी को अपने पास उदयपुर ले आए तथा उन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त करने का पूर्ण अवसर व सहयोग प्रदान किया ।

इस प्रकार दुनिया के रंगमंच पर कुछ ही ऐसे व्यक्ति पैदा होते हैं जो युग के केनवास पर अपनी उज्ज्वल छवि अंकित कर देते हैं। कुल मिला कर एक प्रेरणादायी, सर्वांगीण व्यक्तित्व, बहुमुखी प्रतिभा के धनी, सरलता व सादगी के संदशेवाहक, मानवीय मूल्यों से ओतप्रोत काकासाहब की मुझ पर तो विशेष कृपा रही है। मेरे व्यक्तित्व के विकास में आपका अनन्य योगदान रहा है। आप सदैव ही मेरे लिए प्रेरणा स्रोत रहे हैं और रहेंगे। ...

Dr. Kothari : Dedicated Patron

-Dr. R. Choudhuri

It has indeed been a privilege and honour for me to be able to become a member of the Vigyan Samiti at a belated phase of my professional carrier. I wish I could have forged a closer relation with this noble institution much earlier.

During my brief interactive phase with Vigyan Samiti, I find this noble institution- a voluntary dedicated institute of the community has been rendering yeoman service to be cause of propagation of science and technology not only within the confines of Udaipur city and for that matter in the state of Rajasthan, but in the country.

It is heartening to know that Vigyan Samiti is bringing out on Dr. KL Kothari the founder of Vigyan Samiti to commemorate the occasion of his attaining 81st Birthday on 30th June 2015, in a befitting manner.

The selfless and saintly scientist as he is, Dr. Kothari has effectively nurtured Vigyan Samiti as an institution with a sense of utmost dedication, devotion and care. Vigyan Samiti will pride itself to able to celebrate such a noble and happy occasion.

I pray the occasion to be a total success.....

विज्ञान समिति के संस्थापक डॉ. के.एल. कोठारी के 80 वर्ष पूर्ण करने पर हार्दिक बधाई ।

आपने जिस मेहनत, लगन से विज्ञान समिति को ऊंचाइयों तक पहुंचाया, वह सराहनीय है। आपकी सरलता, सहृदयता एवं कर्मठता से मानव सेवा को आगे बढ़ाया, यह अद्भुत है। आपका पारिवारिक जीवन सुख और शांतिपूर्ण रहे, आपकी प्रसिद्धि दूर दूर तक फैले, आप शतायु हों, यही कामना करते हैं। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ...

चंद्रकांता भंडारी

कल्पना व कर्मशक्ति का दुर्लभ संयोग

ख्यालीलाल बोहरा

कल्पनाशक्ति एंव कर्मशक्ति के धनी डॉ. कुन्दनलाल जी सा. कोठारी का जन्म 30 जून 1935 को केलवा में श्रीमान् शेषमल जी सा. कोठारी की धर्मपत्नी श्रीमती कज्जू देवी जी के कोख से हुआ। प्रशासन, धर्म परायणता एवं कवित्व के गुण इन्हें अपने पिताश्री से विरासत में मिले। इनके घर के पास ही वह अंधेरी ओरी, जिसमें तेरापंथ धर्म के संस्थापक एवं प्रथम आचार्य श्री भिक्षु स्वामी ने प्रथम चातुर्मास किया। उस समय में आचार्य श्री भिक्षु स्वामी की साधना की रश्मियों का ही असर डॉ. कोठारी सा. के बाल्यकाल पर पड़ा।

मेरा जन्म भी केलवा में ही 1933 में हुआ अतः हम हमउम्र हैं। हमारी प्रारम्भिक शिक्षा उस समय में संचालित गांव की कक्षा चार तक की पाठशाला में हुई जिसमें कई और सहपाठी भी रहे। हमारे बचपन की अनेक मधुर स्मृतियां आज भी मेरे मन मस्तिष्क में तरोताजा हैं। इस शाला की शिक्षा की समाप्ति के बाद हम कुछ सहपाठियों ने राजनगर मिडिल स्कूल में कक्षा 8 तक अध्ययन पूरा किया तथा आप आगे के अध्ययन के लिए उदयपुर आ गये और यहां कृषि विज्ञान में विभिन्न डिग्रियां लेते हुए आपने प्लांट पैथोलोजी में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की।

आपका अपने गांव और वहां के निवासियों के प्रति अटूट स्नेह और लगाव रहा है। विक्रम संवत 2017 (सन्1960) में आषाढ़ी पूर्णिमा को तेरापंथ धर्म के द्विशताब्दी समारोह एवं दीक्षा समारोह जो गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी एवं कई साधु–साध्वियों के सान्निध्य में सम्पन्न होना था, उस समारोह की तैयारी के लिए आप निश्चित दिन से कई दिनों पहले उदयपुर से केलवा में आ गये और स्थानीय समाज के लोगों के साथ दिन रात काम किया। गांव की देवतलाई के पास उपलब्ध भूमि पर समारोह स्थल बनाया गया जिस पर यह समारोह सम्पन्न हुआ जिसमें 13 दीक्षाएं भी आचार्य श्री द्वारा प्रदान की गई। वर्तमान साध्वी प्रमुखा श्री कनकप्रभा जी की दीक्षा भी इन दीक्षाओं में शामिल थी। इस समारोह में देश के कई भागों से हजारों की संख्या में लोग उपस्थित हुए। इस भव्य समारोह की सफलता में डॉ. कोठारी सा. की बड़ी ही महत्वपूर्ण भूमिका रही।

विज्ञान समिति की स्थापना – डॉ. कोठारी सा. कल्पना करते रहे कि उनके कृषि ज्ञान विज्ञान का लाभ गांव और आसपास की जनता को मिले अतः वर्ष 1959 में केलवा के तत्कालीन ठाकुर सा. कैप्टन दौलतसिंह जी सा. से मिले और उनसे इस समिति को बनाने के उद्देश्य और लाभों के बारे में चर्चा की। ठाकुर सा. ने इस समिति के कार्यकलापों का सहर्ष समर्थन करते हुए ठिकाने में

ही उपयुक्त स्थान जिसे दरीखाना कहा जाता था, इस समिति की गतिविधियों के लिए दे दिया। इस तरह 28 अगस्त 1959 को डॉ. कोठारी द्वारा विज्ञान समिति की स्थापना श्रीमान् केलवा ठाकुर सा., ठिकाणा परिवार के सभी सदस्यगण तथा गांव के काफी लोगों की उपस्थिति में सम्पन्न हुई । तत्पश्चात् डॉ. कोठारी सा. स्वयं अपने कुछ अन्य विशेषज्ञों सहित समय 2 पर केलवा आते रहे और कृषि के उन्नत तरीकों, पौध संरक्षण की कई प्रकार की साहित्य सामग्री, पोस्टर, शो केसेज आदि साथ लाकर वहां उपस्थित कृषकों की आवश्यक जानकारी देते। मैं भी वर्ष 1966 तक राजसमन्द क्षेत्र में ग्राम सेवक पद पर था अतः क्षेत्रीय कृषकों को निश्चित दिन केलवा जाकर विज्ञान समिति के इन कार्यक्रमों में भाग लेकर लाभान्वित होने के लिए भेजा करता और यथासम्भव मैं स्वयं भी उपस्थित होता। पंद्रह वर्ष की सेवा के बाद वर्ष 1967 में मैंने भी राज. कृषि महाविद्यालय में स्नातक की डिग्री के लिए प्रवेश ले लिया। इस अध्ययन अवधि में डॉ. कोठारी सा. से फिर मेरा गहन संपर्क हो गया।

वर्ष 1959 में स्थापित विज्ञान समिति ने आज वटवृक्ष का रूप धारण कर लिया है जो सबके सामने है। इस समिति से धीरे 2 कई कृषि एवं अन्य वैज्ञानिकगण तथा विषय विशेषज्ञ जुड़कर अपनी स्वैच्छिक सेवाएं दे रहे हैं। समिति में अब कई प्रकार की समाजोपयोगी गतिविधियां चल रही है। कई प्रकार के इसमें प्रकोष्ठ स्थापित हो गए हैं जिनके जरिये कई वर्ग के पुरुष एवं महिलाओं को ज्ञान के साथ 2 अर्थोपार्जन का लाभ भी मिल रहा है। इतनी सारी गतिविधियों का संचालन डॉ. कोठारी सा. की परिकल्पना और उनके अथक प्रयासों का ही परिणाम है।

आप अनेक सामाजिक संस्थाओं के संस्थापक, पदाधिकारी एवं सक्रिय सदस्य हैं। स्थानीय तेरापंथ समाज के आप कई वर्षों तक अध्यक्ष और कई बार सभा के चुनाव अधिकारी रहे हैं। आपने अपने धर्मसंघ एवं संघपतियों के प्रति पूर्ण श्रद्धा रखते हुए करीब 3 वर्ष पूर्व अपनी और तेरापंथ की जन्मभूमि केलवा में भिक्षु आलोक संस्थान की स्थापना की और निरन्तर उसकी प्रगति के लिए आप प्रयत्नशील हैं। इस संस्थान के कई महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं जिसे समाज के सदस्यों का समर्थन और सहयोग प्राप्त हो रहा है।

इतनी सारी गतिविधियों में सक्रिय रहते हुए भी आपने अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को बखूबी निभाते हुए अपने चारों पुत्र–पुत्रियों को सुसंस्कारित एवं सुशिक्षित बनाया जिससे वे सब अपने 2 जीवन में सफल हैं।

अंत में, मैं डॉ. कोठारी सा. के लिए शुभ एवं मंगल कामनाएं प्रस्तुत करते हुए प्रभु से प्रार्थना करता हूं कि वह इन्हें अपने पारिवारिक सदस्यों सहित सदा स्वस्थ एवं सुखी रखते हुए चिरायु करें जिससे ये इसी प्रकार सदा समाज की सेवा करते रहें।

प्रेरणा–पुरुष : कोठारी साहब

भंवर वागरेचा
कार्याध्यक्ष
तुलसी साधना शिखर, राजसमन्द

दुनिया में प्रत्येक व्यक्ति का जन्म लेना एवं मृत्यु का वरण करना उसके हाथ में नहीं होता, यह तो नितान्त रूप से नियति एवं प्रकृति के हाथ में है। परन्तु इन दोनों के बीच जो प्रत्येक व्यक्ति का जीवन होता है यह निश्चित ही बहुत हद तक उसके हाथ में होता है और उसे वो सही दिशा देकर अच्छा भी बना सकता है या गलत दिशा में जाकर नष्ट भी कर सकता है। आदरणीय कुन्दन जी कोठारी साहब का पूरा का पूरा जीवन एवं उसकी यात्रा इस तथ्य का सशक्त उदाहरण है कि कैसे कोई भी स्व–विवेक, चिन्तन, पुरुषार्थ, लगन एवं निष्ठा के साथ अपने को सही दिशा में बढ़ाये तो अपना जीवन न सिर्फ अपने या परिवार के लिये वरन समग्र समाज के लिए प्रेरक एवं अनुकरणीय बना सकता है।

शिक्षा की दृष्टि से अत्यन्त पिछड़े मेवाड़ क्षेत्र के छोटे से गांव केलवा के एक सामान्य परिवार में जन्म लेकर आदरणीय कोठारी साहब ने अपने स्वनिर्णय एवं संकल्प के सहारे अपनी जीवन यात्रा को इस तरह आगे बढ़ाया कि परिवार एवं समाज के लिए गौरव व गरिमापूर्ण बन गई। निश्चित ही वो सौभाग्य शाली थे कि उनको शैक्षिक वातावरण वाला परिवार मिला जो सामान्यतया उस समय के मेवाड़ में सहज उपलब्ध नहीं था। उपलब्ध वातावरण एवं सुविधा को उचित दिशा में मोड़ना स्व–विवेक पर ही निर्भर करता है। ऐसा ही कोठारी सा. ने किया। प्रारम्भ से ही शिक्षा के क्षेत्र में भी उनकी रुचि विज्ञान में थी और उसी को उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बनाया, इसी का परिणाम है कि इस क्षेत्र में वो उच्च से उच्च स्तर तक सम्पूर्ण सफलता के साथ पहुंचे । मात्र इतना ही नहीं विज्ञान का यह क्षेत्र कैसे जन–कल्याणकारी बन सके , कैसे आम आदमी के जीवन को सुखी बनाने में सहयोगी हो सके, इसके लिए विषय–विशेष में शोध कर डॉक्टरेट की उपाधि हासिल करने का महनीय कार्य किया ।

सन् 1959 में शिक्षा के साथ उन्होंने उस काल में अपने छोटे से गांव में विज्ञान समिति गठित करने की कल्पना ही नहीं की वरन उसे मूर्त रूप भी दे दिया और उससे भी आगे जाकर अपनी सूझ–बूझ एवं दूरदृष्टि से उस कल्पना को विशाल स्वरूप प्रदान करने के लिए उदयपुर में 20 हजार स्क्वायर फीट का भूखण्ड आवंटित करवा समिति का भौतिक आकार बनाने हेतु शिलान्यास भी करवा लिया। निश्चित ही इस अभियान में उन्हें कई–कई हस्तियों का सहयोग प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में

मिला होगा पर यहां यह तथ्य तो प्रमाणित होता ही है कि ''मैं तो अकेला ही चला था जानिबे मंजिल की ओर मगर लोग साथ आते रहे और कारवां बनता गया''। 55 वर्ष पूर्व जो कल्पना की गई और जो यात्रा शुरू हुई, आज वे विज्ञान समिति संस्थान न सिर्फ उदयपुर या राजस्थान का वरन् देश–विदेश का महत्वपूर्ण संस्थान बन गया है और अपनी उपलब्धियों का परचम लहरा रहा है। यह संस्थान वर्तमान में सैंकड़ों–सैंकड़ों अपने अपने क्षेत्र में विशिष्ट सेवारत या सेवानिवृत्त प्रबुद्ध मनीषियों का मिलन, चिन्तन एवं योजनाओं के क्रियान्वयन की कर्म–स्थली बना हुआ है जिसके माध्यम से कई तरह की जन–कल्याण की प्रवृत्तियों का स्थाई रूप से संचालन हो रहा है जो वंदनीय है, अभिनंदनीय है।

आदरणीय कोठारी साहब ने अपने व्यक्तित्व को मात्र शैक्षिक जगत तक ही सीमित नहीं रखा, वरन् अपनी उर्वरा कर्मजा शक्ति को समाज एवं अध्यात्म सेवा के क्षेत्र में भी विस्तीर्ण किया। जिस तरह विज्ञान समिति के माध्यम से अपनी प्रतिभा का उपयोग कर उसे जन–उपयोगी बनाया, उसी तरह समाज सेवा के कई प्रकल्पों से जुड़कर उन्हें सामाजिक उन्नयन एवं उत्थान का हेतु बनाया और इसी तरह अध्यात्म के क्षेत्र में परम श्रद्धेय गुरुदेव तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ जी के दिशा–निर्देशन में उनमें नए आयाम जोड़े। यह आपके व्यक्तित्व की विशालता ही है कि कई–कई संस्थानों ने आपको अलग–अलग समय पर आपकी सेवाओं का अंकन करते हुए सम्मानित किया ।

चूंकि मैं स्वयं भी कोठारी सा. के सान्निध्य में कुछ समय तक विज्ञान–समिति की गतिविधियों का संचालन राजसमन्द में कर चुका हूं। इसलिए निःसंकोच यह कह सकता हूं कि इतनी उपलब्धियों के बावजूद भी उनमें अहंकार की बू दूर–दूर तक नजर नहीं आती वरन् इससे कतई उलट उनमें सरलता, सहजता, अपनापन का जो मानवीय पक्ष है वह कदम–कदम पर उजागर होता है। मेरा तो मानना है कि उनका इतना विशाल व्यक्तित्व, इतनी ढेर सारी उपलब्धियां और ऐसा शालीन शिक्षित एवं सुसंस्कृत परिवार जो मिला है उसके जड़ में यही मानवीय मूल्य सहयोगी बने हैं।

अब जब आदरणीय कोठारी साहब जीवन के आठ दशक सफलतापूर्वक सम्पन्न कर नवें दशक में प्रवेश कर रहे हैं, वो और भी ऊंचाइयों को छुए, नये नये कीर्तिमान स्थापित करें और जैसा उत्साह, उमंग उनमें आज है वो सदा–सदा बरकरार रहे। उनके दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन की शुभकामना के साथ।...

महिला सशक्तीकरण के सोपान

निर्मला राव

विज्ञान समिति में बहुत अच्छी अच्छी बातें एवं संस्कार सिखाए जाते हैं। गरीब बच्चों, असहाय की सहायता की जाती है। पिछड़े लोगों को, ग्रामीण महिलाओं को नई नई तकनीक से काम सिखाया जाता है जिससे अपना रोजगार चला सके। डॉ. के.एल. कोठारी सर अपने तन मन से पूरी पूरी कोशिश करते हैं। मैं 2009 में विज्ञान समिति से जुड़ी हूं। हम महिलाओं ने कई तरह के व्यंजन बनाना और खाद्य पदार्थों का रख–रखाव सीखा । हमें डेयरी कॉलेज और सुखाड़िया विश्वविद्यालय से प्रशिक्षण दिलाया। पुष्पा जी कोठारी, मंजुला जी शर्मा ने हमारी कई तरह से मदद की, जैसे– लाने ले जाने की व्यवस्था की। प्रशिक्षण पूरा होने के बाद कोठारी सर ने मुझे कहा– निर्मला ! तुम यहां हमेशा आ सकती हो और कुछ काम कर सकती हो। उसके बाद मैंने अपना छोटा व्यवसाय खोला। मुझे विज्ञान समिति में जगह दी, अलमारी दी। सर ने कहा कि तुम अपना बनाया हुआ सामान यहां रख सकती हो। मैंने भी आंवले के कई तरह के व्यंजन सीखे। पापड़ी, आलू चिप्स बनाती और जब भी कोई शिविर लगता है तो मैं अपना काउन्टर लगाती।

विज्ञान समिति से जुड़े सभी लोग मेरी मदद करते और मेरा हौंसला बढ़ाते । उस समय मेरी आर्थिक स्थिति कमजोर थी। मेरे हाथ का फूड प्रोडक्ट अच्छा बिकता। कोठारी सर ने मुझे कई बार लोन भी दिलाया जिससे मैं अपना व्यवसाय आसानी से चला सकी और मेरा हौंसला बढ़ा। मुझे पीकू सिखाने का मौका दिया। पीकू मशीन भी विज्ञान समिति ने लाकर रखी। मैं जरूरतमंद महिलाओं को सिखाती जिससे मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। विज्ञान समिति से सुशीला मैडम ने मुझे आलू चिप्स की मशीन दी जिससे मैं आलू चिप्स बनाती हूं, बेचती हूं। आज मैं आत्मनिर्भर हूं और मैं बहुत कुछ सीखी हूं जिसका सारा श्रेय विज्ञान समिति को है। कोठारी सर एवं मिसेस कोठारी को मैं बार बार धन्यवाद देती हूं। मैं हमेशा आभारी रहूंगी क्योंकि आज मैं हर कार्य आसानी से कर सकती हूं। विज्ञान समिति के सदस्यों को धन्यवाद।

लक्ष्मी देवी

स्वयं सहायता समूह में छोटी–छोटी बचत से दस समूह तैयार किए गए जिसमें बैंक से लेन–देन का काम शुरू किया और बैंक से लोन दिलाया व जमा कराया। विज्ञान समिति ने समय–समय पर मीटिंग रखी व समूह को भ्रमण के लिए बाहर नौ दिन के लिए भेजा गया जिसमें दिल्ली, जयपुर एवं कोटा का भ्रमण करवाया । पशुओं के लिए उत्तम आहार बनाने व खेती–बाड़ी में उन्नत बीज बोने के लिए दिये गये तथा वृक्षारोपण को बढ़ाव देने के लिए उत्तम प्रकार के पौधे

प्रदान किए। इसके अलावा 1 माह के लिए सिलाई केन्द्र खोला गया जिसमें सिलाई सिखाई तथा एक महिला को सिलाई मशीन प्रदान की गई। पशु आहार को उत्तम बनाने की लिए अच्छी अच्छी जानकारियां दी गई जिसमें 10 दिन कैम्प लगाया गया और एक सौलर कुकर प्रदान किया गया जिसमें पशु आहार सूर्य की रोशनी से तैयार होता है।

इस प्रकार अलग–अलग प्रकार के कैम्पों के माध्यम से समूहों को मार्ग निर्देशन दिया गया। इस प्रकार हमें विज्ञान समिति से अनेक प्रकार की जानकारियों प्राप्त हुई जिसके लिए हम आभार व्यक्त करते हैं।

सभी की तरफ से विज्ञान समिति को बहुत बहुत धन्यवाद।

सविता मीणा

मैं विज्ञान समिति से वर्ष 2001 से जुड़ी हूं क्योंकि विज्ञान समिति ऐसा संस्थान है जो भी समूह में जुड़ता है, उसे अपना भविष्य अच्छा बनाने का अवसर मिलता है। मैं सविता पत्नी धर्मपाल जी छोटी उन्दरी में एक दसवीं फेल विद्यार्थी थी जो विज्ञान समिति से जुड़ने के बाद मैंने कोटा विश्वविद्यालय से बारहवीं का फॉर्म भरा, पढ़ाई की और पास हो गई । उसके बाद मैंने अपने पुराने समूह के आधार पर बाल विकास अधिकार के तहत दूसरा समूह बनाया और बनाने के बाद मेरे ऊपर थोड़ा सा कर्ज ज्यादा हो गया फिर भी मैंने हिम्मत नहीं हारी और हिम्मत के सहारे धीरे धीरे दो तीन साल में कर्जा उतर गया। समूह में दस औरतों के सहारे एवं विज्ञान समिति की सलाह से हम अपने पैरों पर खड़े हो गए हैं ।आज भी भैरूजी फैडरेशन उन्दरी के नाम पर हमारा समूह चल रहा है।

विज्ञान समिति में जुड़ने के बाद, मैं पूर्व में पांच साल के लिए वार्ड पंच चुनी गई ।पांच साल जनता की सेवा की और हमारे ऊपर बड़ों का आशीर्वाद रहा तो सरपंच बनने की कोशिश कर रही हूं । कोठारी साहब ने बार–बार पढ़ाई के लिए मेरा हौंसला बढ़ाया। आज मैं जो कुछ भी हूं कोठारी साहब एवं विज्ञान समिति की बदौलत से ही बढ़ी हूं।

व्यक्ति परखने में जौहरी

श्री जे.एस. दवे
से.नि. अतिरिक्त मुख्य अभियन्ता
सा.नि.वि., (राजस्थान सरकार)

डॉ. के.एल. कोठारी सा. जो गत 55 वर्षों से विज्ञान समिति के प्रकाश स्तंभ के रूप में कार्यरत हैं । उनके सम्पर्क में आने का माध्यम स्व. श्री ललित बक्शी सा. पूर्व मुख्य अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग बने। वर्ष 2007 में जब नये हॉल का निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ तो स्व. बक्शी सा. ने मुझे उनके घर पर बुलाया और यह इच्छा प्रकट की कि मैं इस निर्माण का समय–समय पर निरीक्षण करता रहूं एवं कार्य की गुणवत्ता पर ध्यान देना है। ऐसा निर्देशित किया जिससे विज्ञान समिति का यह निर्माण कार्य अच्छा हो। उस समय कोठारी सा. अध्यक्ष थे और बक्शी सा. ने मेरा परिचय कोठारी सा. से कराया । प्रथम परिचय में ही ऐसी आत्मीयता लगी कि जब उन्होंने कहा कि जो विषय जिस व्यक्ति का है उसमें यहां कोई दखल नहीं होती है।

इसके बाद निरन्तर विज्ञान समिति में आना जाना रहा और बाद के हॉल एवं बेसमेंट का निर्माण कार्य जब श्री आर.के. चतुर कार्यवाहक अध्यक्ष थे एवं निर्माण समिति अध्यक्ष श्रीमान् इब्राहिम अली जी थे। यह निर्माण कार्य वर्ष 2011–2013 में कराना प्रारम्भ हुआ। कई व्यक्तियों का यह संशय था कि उदयपुर में बेसमेंट सफल नहीं है। अतः यह कार्य नहीं कराया जाना चाहिए परन्तु जब मैंने श्री कोठारी सा. एवं श्री महेन्द्र प्रताप जी बया सा. से इसके लिए विस्तृत रूप से विवेचन कर यह जिम्मेदारी ली कि इस बेसमेंट के निर्माण कार्य के बाद इसमें कोई लीकेज अथवा सीलन नहीं आएगी। जब मेरे द्वारा पूर्ण आश्वस्त हो गए और यह कार्य पूर्ण हुआ और पूर्ण होने पर मुझे बधाई दी।

इस प्रकार कार्य से प्रसन्न होकर मुझे विज्ञान समिति का सदस्य घोषित किया। कार्य की परख करने की इनकी खूबी है और जिस विषय का जो ज्ञाता है उसको कार्य करने की पूर्ण स्वतंत्रता देते हैं यह इनकी विशेषता है।

इनके द्वारा जो पौधा 55 वर्ष पहले लगाया गया वह अब पूर्ण रूप से विकसित होकर कई लोगों को बरगद सी छाया प्रदान कर रहा है। ये सुखद छांव विज्ञान समिति की विभिन्न गतिविधियों के रूप में प्राप्त हो रही हैं।

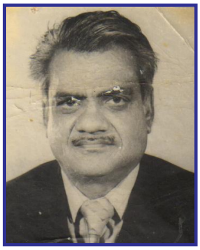

कुन्दनलाल कोठारी : मेरे बाल सखा

डॉ. औंकार सिंह राठौड (केलवा)
पूर्व निदेशक (प्रसार शिक्षा)
राजस्थान कृषि वि.वि., बीकानेर

मैं और कुन्दनलाल जी एक ही गांव केलवा के रहने वाले हैं। बचपन में हम दोनों केलवा स्कूल में एक साथ ही पढ़े। आप के दादा बा और मेरे दादा हुकम के बीच ज्ञान–विज्ञान की चर्चा होती रहती थी; तब कुन्दन लाल जी मेरे साथ होते। दाता राम सिंह जी मुझे फरमाते कि बालक को अन्दर ले जा और नाश्ता करा ला। मैं उनको अंदर ले जाता व नाश्ता कराता था।

मेरे पिता श्री फतेहसिंह जी और कोठारी के पितामह के बीच भी अच्छी मित्रता थी, वो अकसर हमारे यहां पधारते व कविता सुनाते थे । हम दोनों बालक गुल्ली–डंडा खेलते, कभी–कभी मैं कुन्दन जी के घर पहुंच जाता, वहीं नाश्ता करता और दोनों खेलते रहते। कॉलेज स्तर की पढ़ाई हमारी पृथक–पृथक जगह हुई । कुन्दन जी जोधपुर पढ़ने गए, मैं एम.बी. कॉलेज में पढ़ता रहा। हम दोनों फिर कृषि महाविद्यालय में वापस साथ हो गए। कोठारी सा. प्लांट पैथोलोजी के हैड बने, मैं एक्सटेन्शन का हैड रहा। दोनों बारी–बारी से कॉलेज के डीन पद पर भी रहे। ऐसे ही एक गांव के दो डीन बने, यह भी एक कीर्तिमान है।

कोठारी सा. ने विज्ञान समिति की स्थापना की । उसका प्रारम्भ केलवा के रावले में हुआ । फिर विज्ञान समिति उदयपुर में स्थानान्तरित हो गई, मैं भी इसका संरक्षक सदस्य हूं और मैं आश्वस्त हूं कि विज्ञान समिति बहुत अच्छे कार्य कर रही है। आपने जमीन पर हॉल व कार्यालय बनवाये । ये हॉल अन्य संस्थाओं के भी काम आते हैं। बचपन से लेकर आज तक हमारी प्रगाढ़ मित्रता कायम है और आगे भी रहेगी।

मैं कुन्दन जी को 81 वें वर्ष में प्रवेश की शुभकामनाएं देता हूं।...

ग्रामीण विकास के स्वप्नदृष्टा

डॉ. गजेन्द्र सिंह शक्तावत
से.नि. प्रोफेसर (कृषि विस्तार)
डी.ए.वी. कॉलेज, अजमेर (राज.)

यह बात होगी करीब 60–65 वर्ष पूर्व की जब मैं, डॉ. कन्हैयालाल शर्मा एवं डॉ. कुन्दनलाल कोठारी तथा महेन्द्र भटनागर, एक सहपाठी के रूप में लम्बरदार हाई स्कूल में अध्ययनरत थे। समय निकलता गया और सन् 1950 में हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण कर महाविद्यालय में प्रवेश किया ।

इस समय से डॉ. कुन्दन कोठारी को कृषि एवं ग्रामीण विकास के सपने आया करते थे। हम कभी कभी उनका मजाक भी किया करते थे कि ऐसे सपने अभी से कैसे आपके मस्तिष्क में प्रवेश पाते हैं। महाविद्यालय से डिग्री प्राप्त करने से पहले ही श्रीमान् के सपने साकार होने लगे। 'लोक–विज्ञान' नाम से एक पत्रिका प्रकाशित होने लगी, इसमें हम सभी ने (डॉ. कन्हैयालाल शर्मा, डॉ. महेन्द्र भटनागर, श्री शौकत अली एवं डॉ. गजेन्द्रसिंह शक्तावत) सहयोग किया, परन्तु मूल विचार एवं सम्पूर्ण प्रयास डॉ. कुन्दन कोठारी के ही रहे थे।

आज के 60–65 वर्ष पूर्व लगाया हुआ यह बीज एक पूर्ण विकसित वृक्ष के रूप में स्थापित हो गया है। इस संस्था द्वारा कृषि विकास, ग्रामीण समाज विकास, महिला सशक्तीकरण एवं शिक्षा के क्षेत्र में आस–पास एवं दूर–दराज के क्षेत्रों में विविध कार्य सम्पन्न किए जा रहे हैं।

विज्ञान समिति केन्द्र पर योग प्रशिक्षण, एक्यूप्रेशर एवं होम्योपैथी से ग्रामीणों एवं नागरिकों की चिकित्सा सेवा की जाती है। इसके अलावा विकास कार्यों से सम्बन्धित व्याख्यान एवं प्रशिक्षण आयोजित किये जा रहे हैं। इस प्रकार के कार्यों के लिए शक्ति एवं प्रज्ञा डॉ. कुन्दन कोठारी को ईश्वर ने पहले ही प्रदान कर दी। व्यष्टि से समष्टि तक पहुंचने का ज्ञान इस व्यक्ति में प्रारम्भ से ही था। योग एवं ईश्वर कृपा के बिना इतनी शीघ्र कुण्डलिनी जाग्रत नहीं होती; लगता है डॉ. कोठारी के पूर्व जन्म के अच्छे कर्म संग्रह का फल वर्तमान में मिला। इस कर्मयोगी ने जो सपने संजोये उनको, अपने जीवन काल में पूर्णता दे दी।

मैं डॉ. कुन्दन कोठारी को सफलता एवं सक्रियता से 80 वर्ष की आयु पूर्ण करने पर शुभकामनाएं एवं बधाई प्रेषित करता हूं। साथ ही परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि वे स्वस्थ रह कर शतायु हो।...

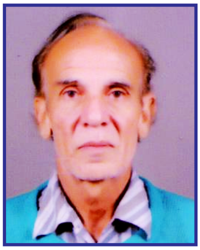

विज्ञान समिति से सीखा स्वावलम्बन

लोभचन्द सोनी
सोनी गृह उद्योग, डबोक

विज्ञान समिति की स्वर्ण जयन्ती पर विज्ञान समिति के संस्थापक, सदस्यों एवं स्टॉफ को हार्दिक शुभकामनाएं।

यों तो मैं विज्ञान समिति से काफी अर्से पहले जुड़ा और किसानों की खेती सम्बन्धित कई गोष्ठियों में भाग लिया पर मेरा यादगार पल वो है जब मुझे विज्ञान समिति से नेशनल रिसर्च डेवलपमेंट कॉरपोरेशन नई दिल्ली (भारत सरकार का उपक्रम) के प्रायोजक से नवीन पोषक एवं औषधीय उत्पाद प्रशिक्षण का अवसर मिला। 19 जनवरी से 25 मार्च 2009 तक 8 सप्ताह का प्रशिक्षण लिया। उस दौरान विज्ञान समिति व प्रशिक्षणार्थी के बीच घर जैसा व्यवहार रहा। उस प्रशिक्षण के बाद भी मुझे किसी मार्गदर्शन की जरूरत होती है मैं विज्ञान समिति आता हूं, मेरी समस्या बताता हूं । मुझे विज्ञान समिति परिवार से पूर्ण सहयोग मिलता है।

मैंने प्रशिक्षण के बाद सोनी गृह उद्योग के नाम से फर्म चालू की जिसमें आंवला, एलोवेरा के उत्पाद व कई तरह के अचार, मुरब्बे, शरबत जो प्रशिक्षण के दौरान बनाना सीखे, वह बनाने लगा। उसकी बिक्री का प्लेटफार्म भी विज्ञान समिति से मिला। उनके मार्गदर्शन से मैं अपनी फर्म को आगे बढ़ा रहा हूं। मेरा अनुभव है कि ये मार्गदर्शन सिर्फ मुझे ही नहीं, हर जरूरतमंद महिला व पुरुषों को मिलता है जो अपने जीवन को सम्भालना चाहते हैं। इतने वर्षों में अनगिनत परिवारों को प्रशिक्षण, सहयोग और मार्गदर्शन से लाभान्वित करने वाली विज्ञान समिति के संस्थापक डॉ. कोठारी सा. एवं विज्ञान समिति परिवार को मैं शुभकामना देना चाहता हूं कि दिन दूना व रात चौगुना आगे बढ़े व जनता एवं समाज का मार्गदर्शन करते रहें। मुझे विज्ञान समिति की स्वर्ण जयन्ती पर कुछ शब्द लिखने का मौका मिला उसके लिए मैं विज्ञान समिति के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूं।

नैतिकता के पोषक : डॉ. कोठारी

सवाईलाल पोखरना (फतहनगर)
पूर्व अध्यक्ष
मेवाड़ तेरापंथ कॉन्फ्रेन्स

सही दिशा में सतत चलने वाला व्यक्ति ही अपने जीवन में हमेशा सफल होता है, इस उक्ति को चरितार्थ करते हुए श्री कोठारी सा. ने 55 वर्ष पूर्व एक सपना संजोया एवं क्रियान्विति में परिणित कर विज्ञान समिति जैसा एक विशाल बहुउपयोगी स्वयंसेवी संस्थान उदयपुर शहर में खड़ा किया।

विज्ञान समिति, उदयपुर की 55 वर्ष की गौरवशाली एवं बहुउद्देशीय यात्रा पूर्ण कर आज राजस्थान ही नहीं अपितु पूरे भारत वर्ष में एक अग्रणी, अनूठी व असाधारण स्वयंसेवी संस्था के रूप में विज्ञान एवं अन्य सामाजिक सेवा के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाने पर कोटिशः हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाइयाँ। साथ ही विज्ञान समिति की इस गौरवशाली यात्रा को पूर्ण करवाने वाले इसके संस्थापक श्री के.एल. कोठारी सा. को भी जीवन के अस्सी बसंत पूर्ण कर इक्यासीवें जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

जन्मदिवस है इक्यासीवां आपका, करें बधाई को स्वीकार
हमें मिठाई अभी चाहिये, ये तो अपना है अधिकार
जुग-जुग जीयें हमारे अग्रज, ईश्वर से करते मनुहार
सदा लुटाते रहें, सभी पर अपना निश्छल लाड़-दुलार।।

पूछा उनसे तो बतलाया, उमर हुई अब अस्सी साल
किंतु अभी भी युवा हृदय से ,देखो इनके रक्तिम गाल
खेतों में हैं फसल उगाते, कागज पर लिखते हैं गीत
जन-सेवा भी करते रहते, निभा रहे जनता से प्रीत।।

धीरज की तो बात न पूछो, अपना नाम करें साकार
पल भर में अपना कर लेते, ऐसा इनका सद्व्यवहार
यही कामना हम करते हैं, आप सदा रहिये खुशहाल
रहे सफलता कदम चूमती, तन मन धन से मालामाल।

श्री के.एल. कोठारी सा. ने कार्य एवं व्यवहार द्वारा स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध किया । 30 जून 1935 को राजसमन्द जिले के केलवा में जन्मे विज्ञान में विद्वता प्राप्त कर मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर एवं राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय उदयपुर/बीकानेर में कई महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य करते हुए इन संस्थानों को पोषित किया । वर्तमान में आप द्वारा स्थापित विज्ञान समिति उदयपुर को अपना जीवन समर्पित कर विज्ञान के प्रचार–प्रसार एवं महिला सशक्तीकरण जैसी योजनाओं को पूरे देश में प्रसारित कर मानव सेवा के पवित्र एवं उत्कृष्ट कार्य में लगे हुए हैं।

आपका सौभाग्य है कि आपने जैन समाज में तेरापंथ धर्मसंघ में जन्म लिया व उस परिवार से ही हैं जो तेरापंथ उद्गम स्थान से प्रारम्भ से जुड़ा हुआ है। आप तेरापंथ के प्रभावी आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ, वर्तमान आचार्य महाश्रमण जी की निगाह में बहुत अच्छा स्थान रखने वालों में से एक है।

मुझे याद है कि एक बार डॉ. कोठारी साहब ने लम्बे समय तक आचार्य तुलसी के दर्शन नहीं किए और प्रसंगवश मैं आचार्य तुलसी के पास ही बैठा था कि उन्होंने मुझे निर्देश दिया कि उन्हें (कोठारी सा. को) याद करना । मैंने कोठारी जी को निवेदन किया कि आपको श्री तुलसी ने याद किया है तो आपने बताया कि मैं बीकानेर से लाडनूं होते हुए दर्शन करता जाऊंगा।

मधुरभाषी, स्पष्टवक्ता, गलत कार्यों में किसी का साथ नहीं देने वाले, कठिन कार्य को सरलता एवं सहजता से सम्पादित करने वाले, नैतिक व्यक्ति श्री के.एल. कोठारी साहब से जुड़े रहना हमारा सौभाग्य है।

आपके स्वस्थ जीवन की मंगलकामनाओं सहित ।...

मेरे जीवन साथी

श्रीमती विमला कोठारी

(धर्मपत्नी)

से.नि. प्रधानाचार्या

महिला मंडल बा.उ.मा.वि., उदयपुर

डॉ. कुन्दन का जैसा नाम है, वैसे ही गुणों से सम्पन्न है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी कोठारी सा. वैज्ञानिक जीवन व्यतीत करते हुए आगे बढ़े हैं। विज्ञान में उनकी प्रगाढ़ रुचि है। शिक्षा के क्षेत्र में भी सबको आगे बढ़ाने का प्रयास करते रहे हैं। जब कार्य आरम्भ किया तब सर्वप्रथम अपनी बहिन संतोष जी व भतीजे यशवन्त जी को पढ़ने के लिए गांव से उदयपुर ले कर आए। उन्हें योग्यता के अनुसार शिक्षा दिलाई। माता–पिता के प्रति अपने कर्तव्य का पूर्ण पालन कर उन्हें भी गांव से लाकर अपने पास रख कर आदर सहित सेवा की।

कोठारी सा. ने सरलता, सादगी, सहिष्णुता, व्यवहार कुशलता के कारण तेरापंथ समाज में वर्षों तक अध्यक्ष पद पर रहकर निष्ठापूर्वक समाज व संगठन का कार्य किया ।

विवाह के पश्चात् इनकी प्रबल इच्छा थी कि गांवों में जाकर विज्ञान का प्रचार–प्रसार करूं। इसी भावना को मूर्त रूप देने के लिए हमारी प्रथम पुत्री रेनु के जन्म के साथ–साथ विज्ञान समिति की स्थापना की। आज इन सभी उद्देश्यों की पूर्ति विभिन्न प्रकोष्ठों के माध्यम से पूरी कर रहे हैं। सभी विद्वानों को एक सूत्र में बांध कर आप सभी की भावनाओं को सम्मान देकर कार्य करते हैं।

कोठारी सा. एक अच्छे वक्ता के साथ लेखन शैली में निपुण हैं। कविता रचने का बहुत शौक है। यह कला इन्हें अपने पिताश्री से विरासत में मिली है। विभिन्न क्षेत्रोसामाजिक, धार्मिक, अध्यात्म, विज्ञान आदि में निपुणता, लगन व निष्ठा से कार्य करने के कारण विभिन्न संस्थानों द्वारा इन्हें सम्मानित किया गया।

परिवार के सभी सदस्यों को सकारात्मक सोच रखते हुए, सामाजिक व देश हित में कार्य करने के लिए प्रेरित करते रहते हैं। हमारे परिवार में महिलाओं को उच्च दर्जा दिया जाता है तथा सभी को इज्जत दी जाती है जो इन्हें इनके बड़ों से विरासत में मिली है। जहां तक मेरे जीवन का सम्बन्ध है, मुझे हर कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। जीवन में कभी कटुता का आभास नहीं होने दिया।

मेरी यही मंगलमय कामना है कि कोठारी सा. परिवार, समाज व राष्ट्र हित में कार्य करते हुए निरन्तर आगे बढ़ते रहें। ...

समग्र गतिविधियों के मार्गदर्शक

बी.एल. मंत्री
चार्टर्ड इंजीनियर
बी.एल. मंत्री एंड ऐसोसिएट्स, उदयपुर

गीता में श्री कृष्ण योग की शिक्षा देते हुए कहते हैं कि ''योग कर्मसु कौशलम्' अर्थात् जीवन में कर्मों को करने की कुशलता है, वही योग है अतः गीता के अनुसार योग कर्मशास्त्र अथवा कर्मविद्या को कह सकते हैं। गीता के आधार पर कर्म को मानव जीवन से अलग नहीं किया जा सकता है। श्री कोठारी सा. लम्बे समय से व्यक्ति सुधार का कर्म कर रहे हैं। कर्म कौशल एवं समिति के माध्यम से शिक्षा एवं विज्ञान का प्रसार कर रहे हैं। मेरे अनुमान से यह उनके लम्बी आयु का आधार है।

उदयपुर शहर स्वैच्छिक सेवा के लिए जाना जाता है, बल्कि यह अतिशयोक्ति नहीं होगी अगर हम कहे कि उदयपुर शहर स्वैच्छिक सेवा की जननी है। श्री कोठारी सा. उन लोगों में से एक हैं जिन्होंने विज्ञान को प्रतिदिन के जीवन में उतारने का निश्चय किया एवं उस हेतु 55 वर्ष पूर्व स्वैच्छिक सेवा केन्द्र के रूप में विज्ञान समिति प्रारम्भ कर विज्ञान के प्रचार–प्रसार तथा महिला सशक्तीकरण का प्रयास किया । इस हेतु विज्ञान समिति की स्थापना की और उदयपुर नगर के केंद्र में 20,000 वर्ग फुट का भूखण्ड नगर विकास प्रन्यास से आवंटित करवाया तथा विधिवत गतिविधियां प्रारम्भ की। इतनी दूरगामी सोच रखने वाले व्यक्ति श्री कोठारी सा. ने घर घर में विज्ञान फैलाया। इस हेतु मैं उनको बधाई देता हूं एवं समिति के सभी सदस्य भी बधाई के पात्र हैं जिनकी लगन से यह कार्य प्रगति कर रहा है। इसमें निरन्तर विस्तार हो रहा है। मुख्यतया महिला सशक्तीकरण में बढ़ावा मिल रहा है।

वर्तमान में विज्ञान समिति में कई गतिविधियां चल रही है जो सार्वजनिक जीवन में उपयोगी है। मुख्यरूप से भावी प्रस्तावित संकल्प इस दिशा में कीर्तिमान स्थापित करेंगे, जैसे – प्रयोगशालाओं की स्थापना, अभावग्रस्त लोगों की समस्याओं का समाधान करवाना, चिंतन केंद्र स्थापित करना, महिला उद्यमिता केंद्र बनाना, स्वास्थ्य एवं विभिन्न चिकित्सा प्रवत्तियों से विशेषज्ञों द्वारा परामर्श के लिए उपचार उपलब्ध करवाना इत्यादि महत्त्वपूर्ण है। शहर के नियोजित विकास के लिए भी समिति के माध्यम से कई बार चर्चाएं की गई हैं एवं प्रशासन को नागरिकों के सुझाव भेजे गए हैं। उसमें विज्ञान समिति का चिंतन प्रकोष्ठ अपना उच्च स्थान रखता है। श्री कोठारी सा. ने शिक्षा के क्षेत्र में पूरा जीवन दिया है इससे भी बड़ी सेवा उन्होंने समिति निर्माण कर की है। इस माध्यम से विज्ञान समिति को शिक्षा का केन्द्र कहा जा सकता है।

श्री के.एल. कोठारी को अपने जीवन के 80 वर्ष सक्रियता पूर्ण करने पर हार्दिक बधाई। मैं उनकी स्वस्थ दीर्घायु की कामना करता हूं एवं विज्ञान समिति निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर होगी । ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

अनवरत प्रगतिशील संस्था के प्रकाश पुंज

हेमन्त बोहरा
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
बोहरा ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज

डॉ. कुंदनलाल जी कोठारी पूर्व डीन राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय का व्यक्तित्व एक अनूठी मिसाल है। कार्य के प्रति उनकी सजगता एवं निष्ठा हम सभी युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है। डॉ. कोठारी जी आचरण में शुद्धि के समर्थक हैं। यही वजह है कि व्यक्तिवादी, राजनैतिक कार्यकर्ता उनकी जीजिविषा के कायल हैं।

विज्ञान और तकनीक का मिश्रित समावेश, सामाजिक कुरीतियों से संघर्ष, महिलाओं की स्वावलम्बिता तथा चहुंमुखी विकास, सामाजिक उत्थान के प्रति सजगता, उनके मूलभूत आचरण में फलित इच्छाशक्ति, उनके तथा विज्ञान समिति संस्था के सदस्यों में प्रतिबिम्बित होती है। विज्ञान समिति की अपनी एक विशिष्ट पहचान है। अपने कार्य के प्रति निष्काम उत्कंठा एवं जागरूकता उस समय गौरवपूर्ण सोपान सिद्ध हुई जब कुछ दशक पूर्व डॉ. कोठारी द्वारा संचालित मेवाड़ सहायता समिति द्वारा विभिन्न पशुशालाओं को हजारों टन चारा तथा अन्य सामग्री उपलब्ध कराई गई। जब राजस्थान तथा पड़ौसी राज्य भीषण अकाल की छाया में थे। उदयपुर की सभी संस्थाओं एवं सरकार ने इस दुष्कर कार्य को मुस्तैदी से करने के लिए उनकी भूरि–भूरि प्रशंसा की।

आपकी निष्काम सेवा, मृदुभाषिता, दर्शन तथा सूझ–बूझ से संचालित विज्ञान समिति ने नए आयाम स्थापित किये हैं। विज्ञान समिति एक ऐसी अनूठी संस्था है जहां किसी भी विधा में पारंगत बौद्धिककर्मी अपने सक्रिय जीवन से निवृत्त होकर पठन–पाठन के अनुभवों को पुनः मुख्यधारा में आकर समाज को लौटाना चाहता है। विज्ञान समिति उन कार्यों को संचालित करती है जो समाज में व्याप्त अंधविश्वास तथा अन्य कुरीतियों को वैज्ञानिक तरीके से मुक्त करें। विज्ञान समिति एक ऐसा मंच है जहां हर क्रियाशील सदस्य समाज के लिए प्रतिबद्ध है

महिला हो या पुरुष हो, समिति उनको ऐसे कार्यक्रम एवं अवसर प्रदान करती है जिससे समाज पूर्णतः लाभान्वित हो सकें। मेरा सम्पर्क डॉ. कोठारी जी से अपने पिता स्व. औंकारलाल जी बोहरा के क्रियाशील जीवन के समय में लगभग 70–80 के दशक से रहा है। उस समय मैं कॉलेज का विद्यार्थी था । कुछ वर्षों बाद डॉ. कोठारी जी संयोग से मेरे मौसाजी हो गए।

मैं पिछले कई वर्षों से उनके विभिन्न कार्यक्रमों में अपनी यथानिष्ठा से सम्मिलित होता रहा हूं और जो भी कोई जिम्मेदारी दी जाती है, उस आज्ञा का पालन करता रहा हूं। इस दौरान मुझे बहुत सारे आदरणीयजन जो सरकारी तथा गैरसरकारी शीर्ष पदों पर शोभित रहे हैं तथा विज्ञान समिति समिति में अपना मूल्यवान समय प्रदान कर रहे हैं, के साथ काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उसके लिए भी मैं मौसाजी श्री कोठारी सा. का आभार प्रकट करता हूं।

डॉ. कोठारी जी के 80 वर्ष पूर्ण होने पर प्रस्तावित अभिनदंन ग्रंथ के प्रकाशन पर मेरे और परिवार की ओर से ढेर सारी बधाइयां एवं मंगल कामनाएं स्वीकार करें।

एक यादगार प्रसंग

ललित नारायण शाह
आई.ए.एस. (सेवानिवृत)
जयपुर

विज्ञान समिति और ''कुन्दन'' एक दूसरे के पर्याय ही है, विज्ञान समिति की कल्पना, स्थापना एवं गत 55 वर्षों की यात्रा अवर्णननीय है। यह कहानी एक जुझारू व्यक्ति की है जो जुनून से ओतप्रोत है । मुझे खेद है कि मेरा अधिक संबंध नहीं रहा और न ही योगदान क्योंकि इस अवधि में मैं उदयपुर केवल 5 वर्ष ही रहा।

विज्ञान समिति के उत्थान एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरा विजन अवश्य था। बात सन् 1972–73 की थी। उन दिनों विज्ञान समिति का कोई परिसर नहीं था और तत्कालीन सचिव के राजकीय आवास से उसका संचालन किया जा रहा था। विज्ञान समिति का अपना स्वयं का परिसर हो, यह मेरे जहन में आया। तब मैं सचिव, नगर विकास प्रन्यास के पद पर पीठासीन था। मेरे मन में आया कि मुझे कुछ करना चाहिए। मैंने सोचा कि क्यों न नगर विकास प्रन्यास से इसके भवन के लिए भूमि आंवटित कराई जाए। मैंने मेरे साथी स्व. मंजूर अली, सहायक अभियन्ता से परामर्श किया और उनसे कहा कि मुझे विज्ञान समिति को उपयुक्त भूमि का आवंटन कराना है। उन्होंने मुझे वर्तमान स्थान का सुझाव दिया। लेकिन इसमें कठिनाइयां अनेक थी क्योंकि यहां पर पार्क स्थित था, अभी भी आधे भू–भाग पर पार्क स्थित है।

उस समय चेयरमैन स्व. गिरधारीलाल शर्मा की मुझ पर अनुकम्पा थी और पूर्ण विश्वास भी। मैंने उनसे चर्चा की, श्री मंजूर अली, सहायक अभियन्ता और नक्शे के साथ, श्री शर्मा सा. के समक्ष प्रस्ताव रखा। समिति के सचिव डॉ. के.बी. शर्मा और चेयरमेन सा. के भी घनिष्ठ सम्बन्ध थे। चेयरमेन सा. की सहमति मिलने के उपरान्त मैंने कुन्दन व के.बी. शर्मा से इस बारे में चर्चा की और उनसे कहा कि वह अध्यक्ष जी से औपचारिक निवेदन करे। बस फिर क्या था, दोपहर पश्चात उन्होंने मुझे अपने कार्यालय कक्ष में बुलाकर कहा कि मैं इस कार्य हेतु प्रस्ताव प्रस्तुत करूं। प्रस्ताव की रूपरेखा तो तैयार थी ही, नक्शे की प्रतिलिपि के साथ प्रस्तुत कर दिया और उनकी अनुमति प्राप्त कर ली। कुछ विरोध अवश्य हुआ लेकिन उनके व्यक्तित्व के आगे न्यास में किसका हौंसला था कि उनका विरोध करे। उन्हें समिति की ओर से नमन।

विज्ञान समिति उत्तरोत्तर वृद्धि करे और प्रिय कुन्दन का मार्गदर्शन एवं योगदान मिलता रहे। मेरी यह कल्पना है कि यह Skill development centre की तर्ज पर आगे विकास करे ताकि अधिक से अधिक युवाओं को ट्रेनिंग दी जा सके और उनका भविष्य निर्माण हो सके।

प्रिय कुन्दन व विज्ञान समिति को अस्सी सलाम। ...

विज्ञान समिति के वटवृक्ष

बसन्तीलाल खमेसरा
पूर्व प्रबंध निदेशक
जोधपुर विद्युत वितरण निगम लि.

इस संसार में कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जो बड़े यत्न से अपने मानस को संतुलित कर अपने अंतःस्थित सौरभ को पहचान लेते हैं और सुवास से स्वयं तो सुवासित होते ही हैं बल्कि अपने आसपास के संपूर्ण परिवेश को भी सुगंधित कर देते हैं। ऐसे ही व्यक्तित्व है हमारे अपने आदरणीय डॉ. के.एल. कोठारी सा. जिनके आदर्शों एवं गुणों से न सिर्फ उनका स्वयं का परिवार बल्कि समाज के वे सभी क्षेत्र जहां–जहां उनके कदम पड़े, सुरभित हुए हैं।

मुझे आपका सान्निध्य प्राप्त हुआ है महावीर इंटरनेशनल तथा विज्ञान समिति के माध्यम से, अग्रज के रूप में। जब भी मैं उनसे मिला, उनमें जीवन्त व्यक्तित्व के दर्शन कर पाया। उन्होंने अपनी कला को कविता के रूप में उकेरा है। किसी ने सच कहा है कि स्वयं के लिए तो सभी जीते हैं, मगर समाज के लिए, हर जाति, धर्म के जरूरतमंद की सहायता के लिए जो जीते हैं वे बिरले ही होते हैं। लीक से हटकर स्वयं के परिश्रम एवं आत्मबल से काम करने में, लक्ष्य के प्रति कटिबद्ध रहने में, समाज के अनुभवी ज्ञान में विश्वास रखने वाले, सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक सभी क्षेत्रों का अनुभव, समस्या का तार्किक हल निकालने में, परिस्थिति अनुरूप मानसिक संतुलन बनाए रखने वाले, वसुधैव कुटुम्बकम् में विश्वास रखने वाले, महान कर्मयोगी विज्ञान समिति के प्रणेता डॉ. के.एल. कोठारी सा. को नमन, नमन,........अभिनमन।

डॉ. कोठारी सा. आदर्श हैं, उन सभी बुजुर्गों के लिए जो बुढ़ापे में जीना भूल जाते हैं। आप आदर्श हैं उन सभी के लिए जिन्हें कुछ कर गुजरने की तमन्ना है। मैं कायल हूँ आपके महत्वपूर्ण गुण – आपकी ऊर्जा का। इस उम्र में जहाँ व्यक्ति आराम से रहना चाहता है, वहीं आपका जोश, आपकी ऊर्जा, कार्य करते रहना, कभी रुकना नहीं। हम सभी को हर समय कुछ करते रहने की प्रेरणा देते हैं कि जब तक जीवन है हमें कुछ अवश्य करना चाहिये। यही जिन्दगी का असली मंतव्य है।

A Man whose LIVING is GIVING. जीवन में संयम, पहनावे में सादगी, विचारों में उदारता और कार्य में नवीनता आपकी विशेषता है। विज्ञान के प्रति समर्पण, कर्त्तव्यनिष्ठा, अथक परिश्रम, परस्पर सहयोग, लक्ष्य प्राप्ति के प्रति उत्साह, हमेशा सजग और प्रयत्नशील। विज्ञान समिति के वर्तमान स्वरूप के मार्गदृष्टा, पिछले 55 वर्षों से आपका विज्ञान के प्रचार–प्रसार में सक्रिय योगदान मेरे–तेरे से ऊपर उठकर आपश्री सब के हो जाते हैं, ऐसे मनीषी से आने वाली पीढ़ियां सदैव प्रेरणा लेती रहेगी।

विज्ञान समिति के माध्यम से देश–विदेश के अपने क्षेत्रों में ख्यातिप्राप्त लोगों को जोड़ना एवं समाज में व्याप्त समस्याओं के निदान हेतु प्रबुद्ध चिन्तन प्रकोष्ठ का गठन कर, जनमानस की भावना को दृष्टिगत रखते हुए, तकनीकी दृष्टिकोण एवं समस्या से जुड़े विभागों के श्रेष्ठ मनीषियों से विचार–विमर्श कर निदान एवं हल निकालकर राज्य सरकार को प्रभावी कदम उठाने के लिए विज्ञान समिति की ओर से सुझाव प्रेषित करना, निसंदेह ज्वलंत समस्याओं के समाधान का अनुकरणीय उदाहरण है। विज्ञान के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ जरूरतमंदों को सहयोग, छात्रवृत्ति प्रदान करना, महिला सशक्तीकरण के कार्यक्रमों को क्रियान्वित कर सम्बल प्रदान करना, विज्ञान समिति ने अतीत का दामन नहीं पकड़ा बल्कि आने वाले भविष्य पर दृष्टि टिकाकर समाज को मार्गदर्शन दिया है।

विज्ञान समिति के स्वर्ण जयन्ती के इस पावन उत्सव पर हम सभी कामना करें कि विज्ञान विकास की यह ज्योति सदैव प्रज्ज्वलित रहे एवं समाज के समग्र विकास में विज्ञान समिति महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान करती रहे।

डॉ. के.एल. कोठारी सा. ने व्यवसाय को पारिवारिक सम्बल प्रदान करने का तो कृत्य किया लेकिन फिर भी आपका अधिकांश समय समाज सेवाओं से प्रतिबद्ध रहा है। आपश्री ने विज्ञान समिति को वटवृक्ष की तरह पुष्पित–पल्लवित किया है और वर्तमान में विज्ञान समिति झीलों की नगरी उदयपुर में आयोजन का एक प्रतिष्ठित केन्द्र बन गया है। विज्ञान समिति को इस आयाम तक पहुँचाने के लिए आपका साधुवाद।

आप 80 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुके हैं लेकिन अभी तो आप युवा है। परम आराध्य जिनेश्वर देव से प्रार्थना है कि डॉ. कोठारी को शतायु करें एवं भविष्य में स्वस्थ जीवन और ऊर्जा के साथ समाज सेवा की विभिन्न गतिविधियों एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में अधिकाधिक सक्रिय रखें एवं समाज को दीर्घ अवधि तक उनका स्नेहाशीष मिलता रहें। इन्हीं मंगलकामनाओं के साथ । ...

कर्मयोगी डॉ. कोठारी सा.

प्रो. जगदीश नारायण कविराज
एसोसिएट प्रोफेसर,
कृषि अभियांत्रिकी एवं तकनीकी महाविद्यालय, उदयपुर

सन् 1966 में मेरा स्थानान्तरण श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय, जोबनेर से डाइरेक्टर ऑफ रिसर्च, उदयपुर में हुआ, जहां मेरा परिचय डॉ. के.एल. कोठारी साहब से हुआ। डॉ. कोठारी जब आर.सी.ए. के डीन में पद पर कार्यरत थे । उस समय एक अविस्मरणीय घटना घटी । डॉ. कोठारी अपने कार्यालय में डॉ. पी.सुन्दरम, विज्ञान महाविद्यालय के डीन से विचार विमर्श कर रहे थे, उस समय उन्हें विद्यार्थियों ने आकर सूचना दी कि एक विद्यार्थी ने जहर खा लिया है। डॉ. कोठारी ने तुरन्त डॉ. बी.भण्डारी, प्राचार्य, आर.एन.टी. मेडिकल कॉलेज उदयपुर से संपर्क किया। इस घटना के बारे में बताकर कहा कि आप इलाज की व्यवस्था तैयार रखें, हम शीघ्र ही विद्यार्थी को लेकर आ रहे हैं। आपने सोचा कि आर.सी.ए. वर्कशॉप से गाड़ी आने में कुछ समय लग सकता है इसलिये डीन होम साइन्स की गाड़ी से तुरन्त छात्रावास पहुंचे। वहां से छात्र को अस्पताल पहुंचाकर इलाज करवाया। विद्यार्थी की जान बच गई। यह डॉ. कोठारी के त्वरित कार्रवाई, जिम्मेदारी तथा कर्तव्यनिष्ठा का एक उदाहरण है। विद्यार्थी के पिता ने डॉ. कोठारी को धन्यवाद दिया कि यदि समय पर लड़के का इलाज न होता तो उसके प्राण संकट में पड़ जाते । डॉ. कोठारी ने जहर खाने के कारण का पता लगाया तो ज्ञात हुआ कि यह एक तरफा प्रेम का परिणाम था। उस विद्यार्थी का स्वामी केशवानन्द कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर में स्थानान्तरण कर दिया ताकि बदले हुए वातावरण में वह पूरे मनोयोग से पढ़ सके।

सन् 2004 में सेवानिवृत्ति के बाद मेरा संपर्क विज्ञान समिति में धीरे धीरे बढ़ा व सन् 2010 में जब विज्ञान समिति अपनी स्वर्ण जयन्ती मना रही थी तब अधिक निकट से संस्था के कार्यों से परिचय हुआ। विज्ञान समिति एक स्वैच्छिक सेवा मंच है जहां हर विषय के सेवानिवृत प्राध्यापक, डॉक्टर, इंजीनियर स्वैच्छा से आते हैं व अपनी सेवाएं प्रदान करने को तत्पर व आतुर रहते हैं। इस संस्था से उद्योगपति, टेक्नोक्रेट, चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट आदि भी जुड़े हुए हैं। यह संस्था अपने आप में एक अनूठी संस्था है। इस संस्था के प्रारम्भ होने के बारे में एक समसामयिक घटना रही। पता चला कि सन् 1959 में पंडित जवाहरलाल नेहरू ने आह्वान किया कि युवा लोगों को विज्ञान की प्रगति के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में ठोस कार्य करना चाहिए। प्रधानमंत्री के आह्वान से डॉ. कोठारी ने प्रेरणा ली व विज्ञान समिति का विधिवत गठन किया अपने पैतृक कस्बे केलवा में। कार्य बढ़ने पर इसका मुख्यालय उदयपुर लाया गया व जहां समिति निरंतर कार्य में संलग्न है।

डॉ. कोठारी के विद्यार्थी जीवन की दो घटनाएं प्रेरणादायक रही हैं। डॉ. कोठारी जब जसवन्त कॉलेज जोधपुर में एम.एससी. कर रहे थे तब आपने अपने मित्र को जसवन्त कॉलेज के अध्यक्ष पद पर चुनाव में बहुत ही कम खर्च में विजय दिलवाई।डॉ. कोठारी जसवंत कॉलेज में अपनी एम.एससी. पूर्ण कर रहे थे तब शिक्षा विभाग ने एक प्राध्यापक का मिड सेशन में स्थानान्तरण कर दिया। प्राध्यापक अपने विषय के पूर्ण ज्ञाता थे व बहुत ही निष्ठा से पढ़ाते थे। डॉ. कोठारी को यह स्थानान्तरण अनुचित लगा व इसके लिए उन्होंने शिक्षा सचिव श्री एस.पी.सिंह भण्डारी व मुख्य मंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया से सम्पर्क कर के उस स्थानान्तरण आदेश को रुकवाया।

विज्ञान समिति के कार्यों के प्रति डॉ. के.एल. कोठारी साहब की प्रतिबद्धता व समर्पण देख कर मुझे भी इस स्वैच्छिक संस्था से जुड़ने की प्रेरणा मिली। डॉ. कोठारी लोकतांत्रिक प्रणाली से कार्य करने में विश्वास रखते हैं। वे कार्य अथवा योजना को मीटिंग में रखते हैं व उस पर पूर्ण रूप से विचार करके ही सबकी सहमति होने पर ही निर्णय लेते हैं।

विज्ञान समिति में सदस्य बनने के बाद मैं तीन कार्यों में सहभागी बना जो आगे जाकर विज्ञान समिति के इतिहास में मील के पत्थर साबित होंगे।

1. महिला समृद्धि प्रकोष्ठ –यह प्रकोष्ठ महिलाओं को अपने व्यवसाय को बढ़ाने के लिए रु. 5000/– का कम ब्याज पर ऋण प्रदान करता है।

2. महिला सेवा प्रकोष्ठ – इस प्रकोष्ठ के अंतर्गत कोई भी महिला अपनी समस्या लेकर आ सकती है। यह प्रकोष्ठ उस समस्या का उचित समाधान करने का प्रयत्न करता है।

3. विज्ञान छात्रवृत्ति प्रकोष्ठ– यह प्रकोष्ठ विज्ञान वर्ग की ग्यारहवीं व बारहवीं की प्रतिभाशाली व जरूरतमन्द छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान करता है ताकि विज्ञान की छात्राओं को प्रोत्साहन मिले।

डॉ. कोठारी साहब की जन्मभूमि के प्रति निष्ठा इस बात से परिलक्षित होती है कि आपके परिवार ने केलवा के अपने पैतृक भवन को स्थानीय तेरापंथ सभा को समर्पित कर दिया। आज वहां एक भव्य भवन बना हुआ है। यह भवन अंधेरी ओरी के पास है जहां तेरापंथ के प्रथम आचार्य श्री भिक्षु ने निवास किया था। डॉ. कोठारी ने अपनी जन्मभूमि केलवा में **आचार्य भिक्षु आलोक संस्थान** का गठन किया व 'श्रद्धा' पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया है जिससे आध्यात्मिक ज्ञान व प्रेरक प्रसंग सदस्यों को पढ़ने को मिल रहे हैं।

सतत् सेवा में संलग्न रहने के कारण आपका मन निर्मल हो गया है व व्यक्तित्व निराभिमानी जो कठोर तप करने पर भी प्रायः नहीं होता है। मेरी परमात्मा से प्रार्थना है कि डॉ. कोठारी साहब का सेवाभाव अधिक से अधिक बढ़े। परमात्मा इन्हें अच्छे स्वास्थ्य के साथ दीर्घायु प्रदान करें।